"अच्छा बुरा"

इतनी रोशनी
फिर भी आती
काली रात

ताज्जुब!
कितनी बुराइयां
घूम फिर सिरे चढ़
आ जाती फिर भी अच्छी बात

क्यों इतना
कड़वा है
यह सच्चा पथ
कुछ सीमा तक
सरपट दौड़कर
रूक जाता है
बदनीयत का क्यों रथ

क्यों आगे उसे
नहीं मिलती अनुमति
जहां अन्तिम छोर पर
खड़ा होता है सच!

Kashmir Singh